SUSHANT UNIVERSITY ORGANIZED INTERNATIONAL CONFERENCE ON
"ADVANCES IN MULTIDISCIPLINARY RESEARCH AND INNVOATION" ICAMRI-2023
ON 28-29TH OCTOBER 2023
INTERNATIONAL ADVANCE JOURNAL OF ENGINEERING, SCIENCE AND MANAGEMENT (IAJESM)
July-December 2023, Submitted in October 2023, iajesm2014@gmail.com, ISSN -2393-8048
Multidisciplinary Indexed/Peer Reviewed Journal. SJIF Impact Factor 2023 =6.753

ज्ञानरंजन की कहानियों में पारिवारिक प्रेम

मंजु बाला, शोधार्थी, हिन्दी विभाग, श्री खुशाल दास विश्वविद्यालय, पीलीबंगा, हनुमानगढ़, राजस्थान–335801
निर्देशक : डॉ. रचना शर्मा, सहायक आचार्य, हिन्दी विभाग, श्री खुशाल दास विश्वविद्यालय, पीलीबंगा, हनुमानगढ़, राजस्थान–335801

शोध आलेख का सारांश

'खलनायिका और बारूद के फूल' में एक साधारण प्रेम–कहानी के माध्यम से कहानीकार विद्रूपता के हलके स्पर्शों के साथ उस परिणति को रुपायित करता है जो प्रेम के हजार स्वप्नों को पूरा न होने की स्थिति में अपने को प्लेटोनिक प्यार के गौरव से जोड़कर झूठी तसल्ली दे लेती है। कहानी में प्रेमिका पिता की इच्छा का विद्रोह नहीं कर सकती है और प्रेमी का समस्त साहस कुंठित रह गया जिससे उसका एक विद्रोही की तरह समस्त अवरोधों को ध्वस्त कर देने का निश्चय था। विवाह के दिन प्रेमिका का आंसुओं से लिपटे स्वर में यह कहना मुझे गलत मत समझना।

प्रस्तावना

मेरा प्रेम आत्मा का है, वह मरते दम तक क्या, जन्म जन्मान्तर तक जीवित रहेगा।[1] और कि उसके अलावा किसी को वह अपना हृदय नहीं दे सकती भले ही तन देना पड़े, कि उसके सारे प्रेमपत्र वापस कर दिए जाएं या जला दिए जाए। उसे तल्खी के बावजूद हंसी दिला देता है यानी यहां आकर उसकी सारी आत्मीयता प्रेमिका के इन शब्दों से सपाट हो गई है। उसके विद्रोह की आग अंदर ही अंदर धुँआ देती रहती है और वह अपनी प्रेम कहानी की नायिका को खलनायिका के रूप में देखने लगता है– उसका यह बोध बहुत तीखा हो उठता है। फटते हुए बारूद की तरह। कायरता और भावुकता का दूसरा नाम उसकी प्रेमिका ने' आत्मा का प्रेम दे दिया और नायक कड़ुवी हंसी से देखता रहा।

वास्तव में आधुनिक स्तरों पर प्रेम की यह परिणति नायक स्वीकार नहीं कर पाता। अपनी आत्मा में प्रेमी की याद और प्रेम को बसाए हुए वह किसी दूसरे का घर बसाने जा रही है, नायक संभवतः उन बाद की स्थितियों की कल्पना करता है और उस जिंदगी के 'झूठ' की भी–जिसमें उसकी प्रेमिका और उसका पति संबंधों को निभाएंगे। हर प्रकार यह कहानी उस संस्कारगत कायरता और भावुकता के प्रति विद्रोह की कहानी बन जाती है, जो कुछ अन्दरुनी होती है और कुछ जिसे मां–पिता अपने प्यार के नाम पर बो देते हैं और जो कालान्तर में कई कुंठाओं और कई उदासियों को जन्म देती है।

'सीमाएं' कहानी भी भारतीय मनोवृत्तियों के टुच्चेपन और संस्कारों से बहुत गहरे जकड़े हुए लोगों की कहानी है। कहानी का 'मैं' जिस परिवार के सम्पर्क में आता है, वे काफी उदार दिखते हैं– अपनी बड़ी लड़की से उसको बातचीत करने की पूरी आजादी देते हैं– घूमने फिरने देते हैं। धीरे–धीरे इस उदारता से साहस पाकर दोनों के सम्बन्धों में जुड़ाव पैदा होने लगता है। लड़की का भाई स्वयं किसी के प्रेम मोह में कुछ भी कर गुजरने को तत्पर है लेकिन यह भारतीय समाज की संकीर्णता की हद है कि यहां प्रेम भी आदमी को उदार और मुक्त नहीं बनाता है। वही विवके जो स्वयं प्रेम के नाम पर षहीद होने के उत्साह से भरा हुआ है, जैसे ही अपनी बहन के प्रेम को आविष्कृत करता है तो कहानी का 'मैं' अपने सारे 'भ्रमों' और तथाकथित 'उदारता' को टूटते हुए देखता है। आश्चर्य की चरम सीमा पर, वह विवके को गुस्से से उबलते हुए पाता है, उसका चेहरा पसीने से नहा गया है... वह लगभग रो उठा मैं तुम्हें अपना सच्चा दोस्त मानता था। तुमने सबिता पर ही डोरे डालने शुरू कर दिए। मेरे ही घर में आग लगाने की कोशिश की।[2]

फिर कहानी का 'मैं' सारे शहर और लोगों के खिलाफ अपने को एक विद्रोह की त्रासद मनःस्थिति में पाता है। वस्तुतः स्वातंत्र्योत्तर भारत में पश्चिमी प्रभाव के कारण और आधुनिकता के नाम पर लोग ऊपरी स्तरों पर काफी उदार हो गए हैं। उदारता के गौरव को चेहरों और घरों पर चिपकाए घूमते हैं। बाहर से वे अपने सारे परम्परागत बंधनों से स्वतंत्र दीखते हैं और स्वतंत्र, मुक्त व्यवहारों,

---

1 खलनायिका और बारूद के पफूल : पफेंस के इध्र और उध्र
2 'सीमाएं' पफेंस के इध्र और उध्र, पृ0..53

INTERNATIONAL ADVANCE JOURNAL OF ENGINEERING, SCIENCE AND MANAGEMENT (IAJESM)
July-December 2023, Submitted in October 2023, iajesm2014@gmail.com, ISSN -2393-8048
Multidisciplinary Indexed/Peer Reviewed Journal. SJIF Impact Factor 2023 =6.753

आचरणों का समर्थन करते से, खुश होते दिखाई देते हैं अपनी उन सारी पूर्वजों की सीमाओं को, वर्जनाओं को तोड़ते हुए दिखाई देते हैं लेकिन सीमाओं का यह टूटना कितना खोखला है व्यावहारिक धरातल पर कितना सतही है इस तथ्य को यह कहानी व्यंग्य की हल्की तर्ज से उभारती है। अन्दरुनी तौर पर लोग वैसे ही दकियानूस हैं, स्वतंत्रताओं के हिमायती होने का ढोंग और सफल अभिनय करते हैं यानी वे महसूस तो करते हैं कि स्वतंत्र होकर, मुक्त व्यवहारों में जीना एक उपलब्धि है लेकिन उनके संस्कारों ने उन्हें इतनी गहराई से, जड़ों से बांध रखा है कि जीवन में जहां कहीं भी उस स्वतंत्रता के खतरों को झेलने, उठाने की बात आती है वह वे अपने उन्हीं आदर्शों में दुबक जाते हैं और उनके टूटने के डर से क्रोधित होते हैं, नैतिकता की दुहाई देने लगते हैं। कहानीकार भारतीय मानसिकता की ऐसी सीमाओं के खिलाफ खुले हुए रूप में कुछ नहीं कहता है बहुत ही तीखे ढंग से लेकिन इन सीमाओं को एक छिपे हुए व्यंग्य की नोक से कुरेद देता है। स्वतंत्रता को दिखावटी तौर पर जीते रहने का दम्भ भरना और बात है और उस स्वतंत्रता के खतरों का सामना करना दूसरी बात है। जीने की षर्त पर अपनी उन भीतरी सीमाओं को तोड़कर उस स्वतंत्रता को उपलब्धा करना निश्चित रूप से एक उपलब्धि है लेकिन इसके लिए खोलों वाली, मुखौटोंवाली जिन्दगी नहीं, भीतर–बाहर दोनों स्तरों पर स्वतंत्र होने को सि(करना ही जिंदगी को ईमानदारी से जीना है।

'फेंस के इधार और उधर' कहानी में ' मैं' अपने से ऊंचे तबके वाले लोगों के सामने एक मानसिक दबाव महसूस करता है। फेंस के उधर वाले परिवार को सदा हसते हुए देख कर 'मैं' व उसका परिवार म नही मन अपनी जड़ें उखड़ते हुए पाते हैं, उन्हें लगता है वे कहीं नहीं है। उधर की उन्मुकतता उनकी जकड़नों की चूलें हिलाती हुई प्रतीत होती हैं। 'मैं' हीन–भावना के दबाव में एक आन्तरिक यातना भुगतनी है, उनके पास कैसी बातें हैं और वे क्यों हमेशा हंसते हैं। क्या उनके जीवन में हंसते रहने के लिए ढेर सी सुखद परिस्थितियां हैं? क्या वे जिंदगी की कठिन और वास्तविक परिस्थितियों से गाफिल हैं।[3]

उनकी मुक्त हंसी और खुले हुए व्यवहार से 'मैं' अप्रत्यक्ष रूप से आक्रान्त होता है–वह अपने घर और दूसरे घर में तुलना करता है और परेशान होता है जैसे हमारे घर और दूसरे घरों में बहुत सी अन्दरुनी और छोटी मोटी परेशानियां होती हैं वैसी शायद इनके यहां नहीं है। नहीं होना एक अचम्भा है।[4]

अपने घर के परिवेश की सारी कमियां 'मैं' के दिमाग में ज्यादा और से उभर आती है और स्वयमेव एक लम्बी सांस छूट जाती है। हमारे घर में तो मौसम, मच्छर, बच्चों की पैदाइश, रिश्तेदारी की बहुओं, चूल्हा चौका तथा वर्तमान का कचूमर निकाल देने वाले भव्य अतीत के दिव्य पुरूषों का ही बोलबाला है।

निष्कर्ष

असल में उसके इस तरह सोचने और दुःखी होने और ठंडी सांस भरने के पीछे अपनी स्थितियों के प्रति सुलगता हुआ विद्रोह का भाव भी है, एक ऊब और हिकारत की भावना है – फेंस के इधर और उधर के परिवारों में कितना अंतर है, इधर जिंदगी परंपरागत दकियानूस ढर्रों में बंधी है और बंधन का अहसास उधर के परिवार को देख–देख कर और भी कौंच उठता है। अपने घर के हालातों मे उसे लगता है जिंदगी फिजूल हुई जा रही है उसका किसी काम में मन नहीं लगता है – आँखें फेंस लांघ जाती हैं। मन पड़ौसी घर में मंडराने लगता है, 'युवा और असंपृक्त लड़की। खुश मिज़ाज और बेख़ौफ माता–पिता। काश मैं उनके घर में ही पैदा हुआ होता। मन यूं उड़ता है।[5] साफ़ जाहिर है उसकी यह कामना, अपनी स्थितियों के प्रति असंतोष से उभरी है।

---

3 'पफेंस के इध्र और उध्र' , पफेंस के इध्र और उध्र पृ0..56
4 ––– वही ––– पृ0...57
5 ––– वही ––– पृ0...55